3. वीरगाथकाल की विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

भारतेंदु युग की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

4. रैदास की भक्ति भावना का परिचय दीजिये। (12)

अथवा

भूषण वीर रस के कवि हैं – स्पष्ट कीजिए।

5. बिहारी का साहित्यिक परिचय लिखिए (12)

अथवा

'हिमाद्री तुंग शृंग से' कविता में निहित राष्ट्रीय चेतना का विवेचन कीजिए।

6. किन्ही **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (6×3=18)

(क) माखनलाल चतुर्वेदी

(ख) छायावाद

(ग) राम काव्य

(घ) 'बेटी की विदाई' की मूल संवेदना

(ङ) कृष्ण काव्यधारा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 12898 **K**

Unique Paper Code : 2055201001

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (A)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) बिनु देबे उपजै नहीं आसा, जो दीसै सो होई बिनासा
बरन सहित जो जाये नामु, सो जोगी केवल निहकामु
परचौ रामु रवै जो कोई, पारसु परसै दुबिधा न होई
सो मुनि मन की दुबिधा पाई, बिनु दुआरे त्रैलोक समाई
मन का सुभाउ सभु कोई करै, करता होई सु अनभै रहे

SRI AUROBINDO COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

अथवा

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर,
दावा नगजुह पर सिंहसिरताज को
दावा पुरहुत को पहारन के कुल पर
दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को
भूषण अखंड नवखंड महिमंडल में
तम पर दावा रबिकिरन समाज को
पूरब पछाँह देस दच्छिन ते उत्तर लौं
जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को

(ख) कहत, नटत, रीझत, खीझत, मिलत, खिलत लजियात
भरे भौंन में करत हैं नैनन हीं सौ बात
जोग जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन
चाहत पिय अद्वैत ता काननु सेवत नैन

अथवा

यह क्या, कि उस आंगन सुने थे, वे सजीले मृदुल रुम झुन
यह क्या, कि इस वीथी तुम्हारे तोतले बोल फूटे
यह क्या, कि इस वैभव बने थे, चित्र हँसते और रूठे
आज यादों का खजाना, याद भर रह जायेगा क्या?
यह मधुर प्रत्यक्ष, सपनों के बहाने जायेगा क्या?

(ग) हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती-
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पन्थ है-बढ़े चलो-बढ़े चलो

अथवा

शत-शत निर्झर निर्शरिणी कल
मुखरित देवदास कानन में
शोणित धवल भोजपत्रों से
छाई हुई कुटी के भीतर,
रंग बिरंगे और सुगंधित
फूलों से कुन्तल को साजे
इंद्रनिल की माला डाले
शंख सरीखे सुघड़ गलों में
कानों में कुवलय लटकाए
शतदल लाल कमल वेणी में
रचित रचित मणि खचित कलामय

2. हिंदी के विकास क्रम को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

"संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका - इस विषय पर लेख लिखिए।

SRI AUROBINDO COLLEGE श्री अरविन्द महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय तमसो मा ज्योतिर्गमय UNIVERSITY OF DELHI